



# उत्तर प्रदेश

पुलिस कांस्टेबल

उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड (UPPRPB)

भाग - 3

उत्तर प्रदेश सामान्य ज्ञान



# विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	उत्तर प्रदेश का इतिहास, सभ्यता, संस्कृति एवं प्राचीन नगर	1
2	भारत के स्वतंत्रता संग्राम में 1857 से पहले एवं बाद में उत्तर प्रदेश का योगदान	10
3	उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत	19
4	उत्तर प्रदेश की जनजाति	29
5	उत्तर प्रदेश की भौगोलिक विशेषता	34
6	उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यजीव अभ्यारण्य एवं आर्द्ध भूमी	48
7	ऊर्जा संसाधन एवं प्रबंधन	53
8	उत्तर प्रदेश में पर्यटन	57
9	अधोसंरचना – परिवहन एवं संचार	63
10	औद्योगिक विकास, शक्ति संसाधन एवं अधोसंरचना	71
11	शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी	79
12	उत्तर प्रदेश की जनांकिकी, जनसंख्या एवं जनगणना	84
13	प्रशासन एवं राजव्यवस्था	86
14	उत्तर प्रदेश में स्थानीय स्वशासन	101
15	उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था एवं नागरिक अधिकार सुरक्षा	104
16	उत्तरप्रदेश बजट – 2025-26	108



## उत्तर प्रदेश का प्रागैतिहासिक इतिहास

- उत्तर प्रदेश अपनी सामरिक स्थिति के लिए प्राचीन काल में मध्य देश के रूप में जाना जाता था।
- इसकी स्थिति के कारण, अधिकांश आक्रमणकारियों ने अपने आक्रमणों के दौरान इसे पार किया।
- उत्तर पश्चिमी प्रदेशों से लेकर पूर्वी राज्यों तक फैला इसका इतिहास, लगभग पूरे उत्तर भारत के इतिहास का पर्याय है।
- प्रतापगढ़ के मिर्जापुर, सोनभद्र, बुंदेलखंड और सराय नाहर जैसे क्षेत्रों में हथियारों और उपकरणों की खोज से पता चलता है कि इसकी सभ्यता नव-पुरापाषाण युग की है।
- मेरठ के एक उपनगरीय इलाके आलमगीरपुर में भी ऐसी वस्तुओं की खोज की गई है जो हड्ड्या संस्कृति से संबंधित हैं।
  - इस तरह के साक्ष्य स्पष्ट रूप से इसके ऐतिहासिक महत्व का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं
  - यह मानव विज्ञानियों द्वारा भी सिद्ध किया गया है।
- प्रतापगढ़ के सरायनहार राय और महदहा में मानव कंकाल की खोज से 8000 ईसा पूर्व के माइक्रोलिथ का पता चला है।
- उत्तर प्रदेश राज्य से अब तक जो कुछ भी खोजा गया है, उससे इतिहासकार अभी भी संतुष्ट नहीं हैं।
- आज उनके पास जाजमऊ (कानपुर), फाजिलनगर (देवरिया), हुलास्खेड़ा (लखनऊ), भीतरगांव (कानपुर), राजघाट (वाराणसी) के क्षेत्रों में खोज करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं।
  - ऐसा माना जाता है कि इन स्थलों से उत्तर प्रदेश के गौरवशाली अतीत के संदर्भ में अभी बहुत कुछ पता लगाना बाकी है।

## पुरापाषाण काल (2 मिलियन ईसा पूर्व से 10,000 ईसा पूर्व)

उत्तर प्रदेश में ताम्र-पाषाण युग के प्रमाण मेरठ और सहारनपुर में मिले हैं।

- प्रमुख साइटें:
  - इलाहाबाद में बेलन घाटी
    - उत्खनन: इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. जी.आर. शर्मा द्वारा किया गया
    - प्रमुख निष्कर्ष: बेलन घाटी के पुरातात्त्विक स्थल 'लोहदानाला' से पत्थर के उपकरण के साथ एक अस्थि-निर्मित देवी की मूर्ति प्राप्त हुई है।
  - सोनभद्र की सिंगराली घाटी
  - चंदौली की चकिया।

## मध्यपाषाण काल (10,000 ईसा पूर्व से 8000 ईसा पूर्व)

- मनुष्यों के अवशेष प्रतापगढ़ के सरायनहरराय और महदहा से प्राप्त हुए हैं।
  - प्रमुख निष्कर्ष: भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे पुराने कृषि साक्ष्य उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर शहर में स्थित लहुरादेवा में पाए गए हैं।
  - 8000 ईसा पूर्व-9000 ईसा पूर्व के चावल की खोज की गई।

## नवपाषाण युग (8,000 ईसा पूर्व से 4000 ईसा पूर्व)

- सरायनहरराय (प्रतापगढ़), मिर्जापुर, सोनभद्र और बुंदेलखंड से खुदाई में उपकरण और हथियार मिले हैं।
  - मानव कंकाल के अवशेष यूपी के प्रतापगढ़ जिले के सरायनहरराय गांव के पास एक स्थल पर दफन पाए गए थे।
    - खोपड़ी के दो साक्ष्य मानव पुरापाषाण विज्ञान के संदर्भ में विशेष ध्यान देने की मांग करते हैं।
    - आर्कस जाइगोमैटिक्स की पूर्वकाल जड़ का पहले प्रीमियर के मेसियल मार्जिन के साथ मिलना।
    - आम तौर पर बड़े दांतों पर इनैमल का मोटा लेप।

## हड्ड्या सभ्यता

### मंडी

- स्थान: मुजफ्फरनगर जिला।
  - यमुना नदी के पूर्व में
  - हड्ड्या सभ्यता के मुख्य वितरण क्षेत्र के लिए परिधीय क्षेत्र
- निष्कर्ष: हड्ड्या के आभूषणों के एक समृद्ध भंडार की प्राप्ति
  - साइट से बरामद किए गए गहनों की बड़ी मात्रा इसे पूरे उपमहाद्वीप में नहीं तो भारत में तो प्राचीन आभूषणों का सबसे बड़ा भंडार बनाती है।
  - तांबे के दो पात्र और बड़ी संभाल में सोने सुलेमानी, गोमेद और तांबे से बने मनके प्राप्त हुए हैं।
  - सोने के मोतियों के प्रकार - स्पेसर बीड़िस, खोखले टर्मिनल बीड़िस, सिंगल और डबल बेल के आकार के बीड़िस और पेपर-थिन सर्कुलर बीड़िस।

## आलमगीरपुर

- स्थान: मेरठ जिला
  - यमुना नदी के किनारे
- सभ्यता का सबसे पूर्वी स्थल।
- इसे 'परशुराम का खेड़ा' भी कहा जाता है
- प्रमुख निष्कर्ष:
  - विशिष्ट हड्ड्या मिट्टी के बर्तनों की प्राप्ति
  - एक परिसर जो मिट्टी के बर्तनों की कार्यशाला प्रतीत होता है।
  - सिरेमिक आइटम: छत की टाइलें, बर्तन, कप, फूलदान, क्यूबिकल पासा, मोती, टेराकोटा केक, गाड़ियाँ और एक कूबड़ वाले बैल और सांप की मूर्तियाँ।
  - बीड़स और संभवतः स्टीटाइट पेस्ट, फ्राइनेस, ग्लास, कारेलियन, कार्टूज, एगेट और ब्लैक जैस्पर से बने ईयर स्टड।
  - धातु अधिक मात्रा में नहीं मिली
    - हालांकि, तांबे से बना एक टूटा हुआ ब्लेड मिला।
  - एक बर्तन के हिस्से के रूप में भालू के सिर की खोज की गई।
  - सोने के साथ लेपित छोटी टेराकोटा मनके जैसी संरचना।
  - कपड़े के साक्ष्य
  - कपास की खेती के साक्ष्य

## हुलास

- स्थान: सहारनपुर जिला
  - यमुना की सहायक नदियों के उच्च तट के साथ: हिंडन नदी, कृष्णा, कथानाला और मस्कारा
- यह एक उत्तर सिंधु घाटी सभ्यता पुरातात्त्विक स्थल है
- प्रमुख निष्कर्ष:
  - पांच गोल भट्टियाँ
  - काले, चर्ट ब्लेड, बॉन पॉइंट्स आदि में चित्रित ज्यामितीय या प्राकृतिक डिजाइनों वाले हाथ से बने और चाक-निर्मित मिट्टी के बर्तन।
  - टेराकोटा खुदा सीलिंग
- कृषि: चना, लोबिया, अखरोट, जई, मसूर, मटर, चना, रागी, और चावल (जंगली और खेती, दोनों किस्में) उगाए जाते थे।
  - पीपल के पेड़ के फल प्राप्त हुए

## सिनौली

- स्थान: बागपत जिला
  - गंगा और यमुना नदियों के दो आव घाट पर स्थित है।
  - 2018 की खुदाई से प्राप्त निष्कर्ष 2000 ईसा पूर्व - 1800 ईसा पूर्व दिनांकित किया गया है जों गेरू रंग की मिट्टी के बर्तनों की संस्कृति (ओसीपी) / कॉपर होर्ड संस्कृति से सम्बंधित है, जो उत्तर हड्ड्या संस्कृति के साथ समकालीन थी।
- प्रमुख निष्कर्ष: कई लकड़ी के ताबूत, तांबे की तलवरें, हेलमेट, और तांबे की चादरों द्वारा संरक्षित ठोस डिस्क पहियों वाली लकड़ी की गाड़ियाँ आदि प्राप्त हुए हैं।

## 2018 में सिनौली उत्खनन 2.0

- 2018: एक किसान ने खेत जोतते समय जमीन में पुरावशेष पाए जाने की सूचना दी।
- प्रमुख निष्कर्ष: घोड़ों द्वारा खींचे गए रथ लगभग 5000 वर्ष पुराने हैं।
  - यह एंकल, चेसिस और पहिया आधुनिक रथों के समान दिखते हैं।
  - माना जाता है कि इन रथों को जानवरों, मुख्यतः घोड़ों द्वारा खींचा गया है।
- हथियार: तांबे की एंटीना तलवारें, युद्ध ढाल आदि पाए गए
- जानवरों को निर्देशित करने के लिए कोड़ा पाया गया
  - इसका मतलब है कि यहां रहने वाली जनजाति जानवरों को नियंत्रित करती थी।
- पुरुष योद्धाओं सहित, महिला योद्धाओं को उनकी तलवारों के साथ दफनाया गया।
  - हालांकि, दफनाने से पहले उनके टखनों के आसपास के पैर हटा दिए गए थे।
- उत्खनन से यहां एक बड़े साम्राज्य के अस्तित्व का संकेत मिलता है।
- शर्वों के साथ बर्तनों में चावल, दाल और जानवरों की हड्डियाँ दफन की गयी हैं।
  - हो सकता है कि ये दिवंगत आत्माओं को अर्पित किए गए हों।
- पवित्र कक्ष जमीन के नीचे पाए गए।
- महत्व: तीन रथ, कुछ ताबूत, ढाल, तलवार और हेलमेट 2,000 ईसा पूर्व के आसपास के क्षेत्र में एक योद्धा वर्ग के अस्तित्व की ओर इशारा करते हैं।

## बड़गांव

- स्थान: सहारनपुर जिला
- साइट उत्तर हड्ड्या काल से संबंधित है, गेरू रंग के मिट्टी के बर्तनों के मिश्रण के साथ।

## वैदिक युग (1500 ईसा पूर्व- 500 ईसा पूर्व)

- प्रारंभ में, भारत में आर्यों के निवास का केंद्र सप्त सिंधु या सात नदियों (अविभाजित पंजाब) द्वारा सिंचित क्षेत्र था।
- सात नदियाँ थीं
  - सिंधु (सिंधु)
  - वितस्ता (झेलम)
  - अस्किनी (चिनाब)
  - परुष्णी (रवि)
  - विपासा (ब्यास)
  - शतुद्री (सतलुज)
  - सरस्वती (अब राजस्थान के रेगिस्तान में खो गई)।
- महत्वपूर्ण आर्य कुल / पंचजन: पुरु, तुर्वसु, यदु, अनु और द्रुह।
  - भरत: प्रमुख कुलों में से एक।
- धीरे-धीरे आर्यों ने अपने क्षेत्र का विस्तार पूर्व की ओर कर दिया।
  - शतपथ ब्राह्मण: ब्राह्मणों और क्षत्रियों द्वारा कोसल (अवध) और विदेह (उत्तर बिहार) की जीत का वर्णन करता है।

- क्षेत्र के विस्तार से नए राज्यों (जनपद) का निर्माण हुआ और नए लोगों और नए केंद्रों का उदय हुआ।
- सप्त सिंधु ने धीरे-धीरे महत्व खो दिया और संस्कृति का केंद्र कुरु, पांचाल, काशी और कोसल के राज्यों द्वारा शासित सरस्वती और गंगा के बीच के मैदानों में स्थानांतरित हो गया।
- पूर्व में प्रयाग तक फैले पूरे क्षेत्र का नाम मध्य देश था।
- आधुनिक उत्तर प्रदेश इस क्षेत्र से मेल खाता है।
- इसे हिंदू पौराणिक कथाओं में पवित्र माना जाता था क्योंकि भगवान और नायक, जिनके कार्य रामायण और महाभारत में दर्ज हैं, यहां रहते थे।
- इसके निवासियों को सबसे सुसंस्कृत आर्य माना जाता था क्योंकि उनके भाषणों ने आदर्श बनाया था और उनके आचरण को आदर्श आचरण के रूप में निर्धारित किया गया था।
- इन राज्यों के शासक, विशेषकर पांचाल के राजा प्रवाहन जयवली, अपने नेक कार्यों के कारण अमर हो गए।

### प्रारंभिक वैदिक काल

- वैदिक भजनों में वर्तमान यूपी को शामिल करने वाले क्षेत्र का शायद ही कोई उल्लेख है।
- यहाँ तक कि गंगा और यमुना जैसी पवित्र नदियाँ भी आर्यों की भूमि के दूर क्षितिज पर दिखाई देती हैं।

### उत्तर वैदिक काल

- उत्तर वैदिक युग में, सप्त सिंधु का महत्व कम हो जाता है और ब्रह्मर्षि देश या मध्य देश का महत्व बढ़ जाता है।
  - उस समय उत्तर प्रदेश वाला क्षेत्र भारत का एक पवित्र स्थान और वैदिक संस्कृति और ज्ञान का प्रमुख केंद्र बन गया।
- वैदिक ग्रंथों में कुरु-पंचाल, काशी और कोसल के नए राज्यों का उल्लेख वैदिक संस्कृति के प्रमुख केंद्रों के रूप में किया गया है।
- कुरु-पंचाल के लोग वैदिक संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि माने जाते थे।
- संस्कृत के उल्कृष्ट वक्ता के रूप में उन्हें बहुत सम्मान प्राप्त था।
- उनके द्वारा स्कूलों और संस्थानों का आचरण प्रशंसनीय था।
- उनके राजाओं का जीवन अन्य राजाओं के लिए एक आदर्श था।
- ब्राह्मणों को उनकी धर्मपरायणता और विद्वता के लिए उच्च सम्मान दिया जाता था।
- उपनिषदों में पांचाल परिषद का प्रमुखता से उल्लेख है।
- अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर विदेह राजा द्वारा कुरु-पंचाल के विद्वानों से विशेष रूप से भेट की गई थी।
- पांचाल राजा प्रवाहन जयवली स्वयं एक महान विचारक थे, जिनकी प्रशंसा शिलिक, दलभ्य, श्वेतकेतु और उनके पिता उद्धालक अरुणी जैसे ब्राह्मण विद्वानों ने भी की थी।

- काशी के अजातशत्रु एक और महान दार्शनिक-राजा थे जिनकी श्रेष्ठता ब्राह्मण विद्वानों जैसे द्विप्ति, वल्हाकी, गार्य आदि ने स्वीकार की थी।

### वैदिक साहित्य

- इस युग के दौरान उपनिषदों में परिणत होने के दौरान विभिन्न विषयों में साहित्य व्यापक पैमाने पर लिखा गया था।
- वे मानव कल्पना की उच्चतम पहुंच को दर्शाते हैं।
- उपनिषद साहित्य, ऋषियों के आश्रमों में ध्यान का उत्पाद था, जिनमें से कई उत्तरप्रदेश में थे।
- भारद्वाज, याज्ञवल्क्यल वशिष्ठ, विश्वामित्र, वाल्मीकि और अत्रि जैसे प्रख्यात संतों के या तो यहां आश्रम थे या वे इस राज्य से जुड़े हुए थे।
- इस राज्य में स्थित आश्रमों में कुछ आरण्यक और उपनिषद लिखे गए थे।

### महाजनपदों की आयु (छठी शताब्दी ई.पू.)

- महाजनपद का शाब्दिक अर्थ है महान राज्य।
- बौद्ध धर्म के उदय से पहले भारत के उत्तर/उत्तर-पश्चिमी भाग में फला-फूला।
- आर्य बहुत समय पहले भारत में चले गए थे और उनके और गैर-आर्य जनजातियों के बीच मवेशी, चारा, भूमि आदि को लेकर नियमित रूप से घर्षण होता था।
- इन जनजातियों आर्यों को कई वैदिक ग्रंथों द्वारा जन कहा जाता था।
- बाद में, वैदिक जनों का जनपदों में विलय हुआ।
- भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों को पहले जनपदों में विभाजित किया गया था, सीमाओं द्वारा स्पष्ट सीमांकन था।
- 600 ईसा पूर्व तक कई जनपद आगे बढ़े राजनीतिक निकायों के रूप में विकसित हुए।
- इन राज्यों को बौद्ध परंपराओं में महाजनपद के रूप में जाना जाने लगा।
- सोलह महाजनपद: काशी, कोसल, अंग, मगध, वज्जि, मल्ल, छेदी, वत्स, कुरु, पांचाल, माघ्या, सुरसेन, असक, अवंती, गांधार और कम्बोज।
- उपरोक्त 16 महाजनपदों में से आठ वर्तमान उत्तर प्रदेश में थे।
  - कुरु
  - पांचाल
  - वैद्स
  - सुरसेना
  - कोसल
  - मल्ला
  - काशी
  - चेदि
- उनमें से अधिक प्रसिद्ध काशी, कोसल और वत्स थे।
- वर्तमान यूपी की सीमाओं के भीतर गणतंत्र राज्य: कपिलवस्तु का शाक्य राज्य, सूर्यसमागमिर का भाग्य और पावापुरी और कुशीनगर का मल्ल राज्य

## काशी

- राजधानी: काशी
- स्थान: वर्तमान वाराणसी
- कासी वह जनजाति है जो वाराणसी के आसपास के क्षेत्र में बस गई थी जहाँ स्वयं राजधानी स्थित थी।
- ऐसी मान्यता है कि वाराणसी को इसका नाम वरुणा और असी नाम की नदियों से मिला है।
- जातकों से काशी के बारे में बहुत कुछ जाना जाता है जो बुद्ध के पिछले जन्मों के इर्द-गिर्द धूमते हुए मिथकों और लोककथाओं का एक विशाल भंडार था।
- इस वर्चस्व ने काशी के साथ कोसल, अंग और मगध जैसे अन्य शहरों के बीच स्वामित्व के लिए लंबे समय तक चलने वाले संघर्ष का आहान किया।
- इसका उल्लेख वैदिक ग्रंथों में मिलता है।
- मत्स्य पुराण और अलबरुनी वे ग्रंथ हैं जहाँ हम काशी को कौशिक और कौशिका के रूप में पढ़ते हैं, अन्य इसे काशी के रूप में पढ़ते हैं।

## कोशल

- राजधानी: श्रावस्ती
- गौतम बुद्ध के समकालीन प्रसेनजित कोसल राजा की कमान में।
- इसमें श्रावस्ती, कुशावती, साकेत और अयोध्या शामिल थे।
- कोसल ने आधुनिक उत्तर प्रदेश के प्रदेशों का गठन किया।
  - दक्षिण: गंगा से धिरा
  - पूर्व: गंडकी नदी
- मगध कोसल का एक पड़ोसी राज्य था, और उनके बीच संघर्ष थे।
- मगध के अजातशत्रु और प्रसेनजीत सत्ता के लिए निरंतर संघर्ष में थे जो अंततः मगध के साथ लिच्छवियों के परिसंघ के सरेखण के साथ समाप्त हो गया।
- प्रसेनजीत के बाद, विदुदाभ सत्ता में आए और कोसल अंततः मगध में समाहित हो गया।

## चेदि या चेति

- राजधानी: सुक्तिमती
- चेदि यमुना नदी के दक्षिण में रहने वाले भारत के प्राचीन लोगों का समूह था।
- ऋग्वेद में उल्लेख
- मगध के जरासंध और कुरु के दुर्योधन के सहयोगी शिशुपाल द्वारा शासित।
- कुरुक्षेत्र युद्ध के दौरान प्रमुख चेदि: दमघोष, शिशुपाल, धृष्टकेतु, सुकेतु, सराभा, भीम की पली आदि।
- इसे पांडवों द्वारा वनवास के 13वें वर्ष बिताने के लिए चुना गया था।

## सुरसेन

- राजधानी: मथुरा
- मेगस्थनीज के समय कृष्ण की पूजा का केंद्र।
- सुरसेन के राजा अवंतीपुर बुद्ध के पहले शिष्यों में से एक थे, और तब से मथुरा में इसे प्रमुखता मिली।
- भौगोलिक स्थिति: मत्स्य के दक्षिण-पश्चिम और यमुना नदी के पश्चिम में।
- इस क्षेत्र में विभिन्न जनजातियाँ निवास करती थीं और उनका नेतृत्व एक मुखिया करता था।

## कुरु

- राजधानी: इंद्रप्रस्थ
- वर्तमान स्थान: मेरठ और दक्षिणपूर्वी हरियाणा
- उत्पत्ति: वे पुरु-भारत परिवार से संबंधित हैं।
- कुरु लोगों, कुरुक्षेत्र में रहने वाले विशिष्ट मूल के थे
- बौद्ध ग्रंथ सुमंगविलासिनी के अनुसार कुरु उत्तर कुरु से आए थे।
- वायु पुराण द्वारा प्रमाणित, कुरु जनपद के संस्थापक कुरु थे
  - पुरु वंश के संवरसन के पुत्र।
- माना जाता है कि छठी/पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान, कौरवों को सरकार के गणतंत्र रूप में परिवर्तित कर दिया गया था।

## पांचाल

- पांचाल उत्तर-पांचाल और दक्षिण-पांचाल में विभाजित था।
- उत्तरी पांचाल राजधानी: अहिछ्वत्र
  - दक्षिण की राजधानी काम्पिल्य में थी।
- वर्तमान स्थान: पश्चिमी उत्तर प्रदेश
- कान्यकुब्ज का प्रसिद्ध शहर यहीं स्थित था।
- पांचाल भी छठी और पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में एक राजशाही से गणतंत्रात्मक सरकार में परिवर्तित हो गया।

## मल्ल

- राजधानी: कुशीनारा
- महाभारत जैसे महाकाव्यों में उल्लेख है कि मल्लों को अंग, वंग और कलिंग की जनजातियों के साथ माना जाता था।
- बौद्ध और जैन कृतियों में मल्लों का उल्लेख है
- उनके पास शुरुआत में सरकार का राजतंत्रीय रूप था, लेकिन बाद में वे गणतंत्र रूप (संघ) में बदल गए।
- वे बहुत युद्धप्रिय और बहादुर लोग थे और उन्हें मनुस्मृति द्वारा वर्त्य क्षत्रिय के रूप में वर्णित किया गया गया है, और महापर्णनिबना सुत्तंत में वशिष्ठ के रूप में उल्लेख किया गया है।
- बुद्ध की मृत्यु के बाद मगध साम्राज्य द्वारा नियंत्रित कर लिया गया।

## वत्स

- सरकार के राजशाही स्वरूप का पालन किया।
- राजधानी:** कौशांबी।
- यह सभी आर्थिक गतिविधियों का केंद्र बना और इसके समृद्ध व्यापार और व्यापारिक संबंध थे।
- महत्वपूर्ण शासक:** उदयन
  - पहले उन्हें बौद्ध धर्म के बारे में नाराजगी थी क्योंकि वे बहुत युद्धप्रिय और आक्रामक थे लेकिन बाद के वर्षों में वे अधिक सहिष्णु और अंत में बुद्ध के अनुयायी बन गए।
  - बाद में बौद्ध धर्म को अपना राजकीय धर्म बना लिया।

## महाकाव्य एवं उत्तर प्रदेश

- उत्तर प्रदेश के प्राचीन महत्व को दो महाकाव्यों रामायण और महाभारत के माध्यम से समझा जाता है।
- वे वैदिक युग के गंगा के मैदानों का वर्णन करते हैं।
- रामायण के अनुसार, कोसल साम्राज्य जिसकी राजधानी अयोध्या थी, जहां भगवान राम ने राज्य किया था, वर्तमान उत्तर प्रदेश में स्थित था।
- महाभारत की कई महत्वपूर्ण घटनाएं उत्तर प्रदेश में घटी हैं।
  - मथुरा में भगवान कृष्ण (भगवान विष्णु के आठवें अवतार) का जन्म।
  - संपूर्ण महाभारत गाथा उत्तर प्रदेश के हस्तिनापुर क्षेत्र में स्थापित है।
  - राजा युधिष्ठिर के अधीन महाभारत युद्ध कुरु महाजनपद में समाप्त हुआ।
- यह नैमिषारण्य (सीतापुर जिले में निमसर-मिसरिख) में था, जहां सूत ने महाभारत की कहानी सुनाई थी, जिसे उन्होंने स्वयं वेद व्यास से सुना था।
- कुछ स्मृतियाँ और पुराण भी इसी राज्य में लिखे गए थे।

## बौद्ध धर्म और जैन धर्म

- गौतम बुद्ध, महावीर, मक्खलीपुत्त गोशाल और महान विचारकों ने ईसा पूर्व छठी शताब्दी में उत्तर प्रदेश में क्रांति ला दी।
- श्रावस्ती के निकट श्रवण में पैदा हुए मक्खलीपुत्त गोशाल, अजीविक संप्रदाय के संस्थापक थे।
- महावीर: जैनियों के 24वें तीर्थकर का जन्म बिहार में हुआ था, लेकिन उत्तर प्रदेश में उनके अनुयायियों की एक बड़ी संख्या थी।
- कहा जाता है कि वह इस राज्य में दो बार बरसात के मौसम में रहे थे
  - श्रावस्ती में पहली बार
  - देवरिया के पास पड़रौना में दूसरी बार।
  - पावा उनका अंतिम विश्राम स्थल था।
- जैन धर्म ने महावीर के आने से पहले ही यूपी में अपनी पैठ बना ली थी।

- पार्वतीनाथ, सांभरनाथ और चंद्रप्रभा** जैसे कई तीर्थकर इस राज्य के विभिन्न शहरों में पैदा हुए और यहां 'कैवल्य' प्राप्त किया।
- यह तथ्य कई प्राचीन मंदिरों, भवनों आदि के खंडहरों से सिद्ध होता है।
- जैन स्तूप:** मथुरा में कंकाली टीला
- प्रारंभिक मध्य युग में निर्मित जैन मंदिर अभी भी देवगढ़, चंदेरी और अन्य स्थानों में संरक्षित हैं।

## वैदिक काल के बाद का इतिहास

- सभी राज्य एक दूसरे के साथ निरंतर युद्धरत थे।
  - कोसल ने काशी पर अधिकार कर लिया और अवंति ने वत्स को हथिया लिया।
  - मगध द्वारा कोसल और अवंति को अपने अधीन कर लिया गया, जो पूरे क्षेत्र में शक्तिशाली हो गया।
- मगध पर हरण्यक, शिशुनाग और नंद राजवंशों द्वारा शासन किया गया।

## नंद राजवंश

- 343 ई.पू. से 321 ई.पू. तक शासन किया।
- पंजाब और शायद बंगाल को छोड़कर पूरे भारत में फैला।
- अपने शासनकाल के दौरान, सिंकंदर ने 326 ई.पू. में भारत पर आक्रमण किया।

## मौर्य राजवंश

- वायु पुराण के अनुसार मौर्य वंश ने 134 वर्षों तक शासन किया था।
- 323 ईसा पूर्व:** चंद्रगुप्त मौर्य मगध के सम्राट बने।
- उनके पोते अशोक ने सारनाथ में चार सिंह की मूर्ति बनाई।
  - सारनाथ में अशोक स्तंभ में अंकित सिंह शीर्ष को भारत सरकार द्वारा राज्य के प्रतीक के रूप में अपनाया गया है।
- अशोक स्तंभ पेट्रोग्राफी सारनाथ, इलाहाबाद, मेरठ, कौशाम्बी, सकिंसा, बस्ती और मिर्जापुर में पाए जाते हैं।
  - सभी शहर उत्तर प्रदेश में हैं।
- अशोक ने सारनाथ में धर्मेख स्तूप भी बनवाया था।
- 232 ईसा पूर्व: अशोक की मृत्यु।
- चंद्रगुप्त, उनके पुत्र बिंदुसार और पोते अशोक के शासनकाल के दौरान पूरे उत्तर प्रदेश ने शांति और समृद्धि का आनंद लिया।
- चीनी यात्री फा-हियान और युआन-चावांग ने भी कई शिलालेख देखे।
- मौर्य साम्राज्य का पतन 232 ईसा पूर्व में अशोक की मृत्यु के साथ शुरू हुआ।

- उनके पोते दशरथ और संप्रति ने पूरे साम्राज्य को आपस में बांट लिया।
- अंतिम शासक: बृहद्रथ**
  - उनके प्रमुख सेनापति पुष्टमित्र ने उनकी हत्या कर दी।
  - पुष्टमित्र ने मौर्य साम्राज्य को अक्षुण्ण रखा।

## शुंग राजवंश

- पतंजलि की टिप्पणी यूनानियों द्वारा साकेत (अयोध्या) पर कब्जे का उल्लेख करती है।
- मिनांडर** और उनके भाई ने लगभग 182 ई.पू. में भारी आक्रमण किया।
- हमलावर सेनाओं ने दक्षिण-पश्चिम सगल (पंजाब में सियालकोट) और मथुरा से दूर काठियावाड़ पर कब्जा कर लिया।
- बाद में, आक्रमणकारियों ने साकेत (अयोध्या) पर कब्जा कर लिया और गंगा धाटी में बहुत आगे बढ़ गए।
- पुष्टमित्र** और उनके पोते वसुमित्र ने सिंधु के तट पर आक्रमणकारियों को चुनौती दी और यूनानियों को हराया।
- आक्रमणकारियों ने पीछे हटकर सगल (सियालकोट) को अपनी राजधानी बनाया।
- लंबे समय तक, **मथुरा मिनांडर** के साम्राज्य का एक प्रमुख शहर बना रहा।
- मिनांडर या मिलिंद ने लगभग 145 ईसा पूर्व तक शासन किया।
- बाद में, ईसाई युग की पहली शताब्दी तक पंजाब में छोटे इंडो-ग्रीक और ग्रीक राज्य फले-फूले।

## कण्व राजवंश

- शुंग वंश के अंतिम राजा की हत्या उसके मंत्री वासुदेव ने की थी।
- वासुदेव ने 75 ई.पू. में कण्व वंश की स्थापना की।
- यह राजवंश 45 वर्षों तक शासन करता रहा।
- सातवाहन** या अंध्र राजवंश के संस्थापक **सिमुक** द्वारा 28 ई.पू. में समाप्त कर दिया गया।

## कुषाण काल (100-250 ई.)

- मध्य एशियाई शासकों का ध्यान पहली बार भारत की ओर आकर्षित हुआ।
- 60 ई.पू. तक उन्होंने मथुरा में अपने क्षत्रप स्थापित किए थे।
- पहला शक राजा माओस था जिसकी मृत्यु लगभग 38 ई.पू. हुई।
- पार्थियनों ने उत्तर भारत पर आक्रमण किया और पहली शताब्दी ई. की शुरुआत तक, उन्होंने शकों को हराना शुरू कर दिया।
- कुषाणों ने भी लगभग 40 ई. में आक्रमण किया।
- कुषाण भी मध्य एशिया की पाँच यू-ची जातियों में से एक थे।

- जल्द ही कुषाण शासकों ने मध्य एशिया से सिंधु नदी तक अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया।
- धीरे-धीरे, उन्होंने पूरे उत्तर भारत पर कब्जा कर लिया।
- प्रमुख शासक: कनिष्ठ**
  - उसके अधीन, कुषाण साम्राज्य अपनी अधिकतम क्षेत्रीय सीमा तक पहुँच गया।
- उत्तर प्रदेश क्षेत्र में वाराणसी, कौशाम्बी और श्रावस्ती सहित मध्य एशिया से उत्तर भारत तक साम्राज्य का विस्तार हुआ।
- कुषाणों ने मूर्तिकला के गांधार और मथुरा स्कूलों का संरक्षण किया, जो बुद्ध और बोधिसत्त्वों की शुरुआती मूर्तियों के निर्माण के लिए जाने जाते हैं।
- कनिष्ठ** के उत्तराधिकारियों ने एक सौ पचास वर्षों तक शासन किया था।
- उनके पुत्र हुविष्ठ ने साम्राज्य को अक्षुण्ण रखा।
- जबकि मथुरा उनके शासन में एक महत्वपूर्ण शहर बन गया, अपने पिता कनिष्ठ की तरह वह भी बौद्ध धर्म के संरक्षक थे।
- अंतिम महत्वपूर्ण कुषाण शासक वासुदेव थे।
- उसके शासन काल में कुषाण साम्राज्य काफ़ी कम हो गया था।
- उनके नाम के विभिन्न शिलालेख मथुरा और उसके आसपास पाए जाते हैं।
- वे शिव के उपासक थे।
- और वासुदेव के बाद, छोटे कुषाण राजकुमारों ने उत्तर पश्चिमी भारत में कुछ समय तक शासन किया जिसके बाद साम्राज्य फीका पड़ गया।
- विम कडफिसेस ने कुषाण साम्राज्य को कम से कम मथुरा तक बढ़ाया, हालांकि उनका एक शिलालेख गंवरिया (उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जिले) से मिलता है और उनके सिक्के पूरे उत्तर प्रदेश और बिहार से भी पाए जाते हैं।
- मथुरा संभवतः कुषाण साम्राज्य का पूर्वी मुख्यालय था।**
- उत्तर प्रदेश में अधिकांश स्थलों ने शुंग-कुषाण चरण के दौरान समृद्धि के अपने शिखर को प्राप्त किया, जब बड़ी संख्या में समृद्ध शहरी केंद्रों को पुरातात्त्विक रूप से प्रमाणित किया जा सकता है।

## गुप्त वंश

- गुप्त साम्राज्य के काल को "भारत का स्वर्ण युग" के रूप में जाना जाता है।
  - विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, कला, साहित्य, तर्कशास्त्र, गणित, खगोल विज्ञान, धर्म और दर्शन में व्यापक अनुसंधान और विकास के कारण जिसने हिंदू संस्कृति के तत्वों को प्रकाशित किया।
- जायसवाल ने बताया है कि गुप्त मूल रूप से उत्तर भारत में प्रयाग (इलाहाबाद), उत्तर प्रदेश के निवासी थे, नागों के जागीरदार के रूप में या उसके बाद वे प्रमुखता से उठे।

- प्रारंभिक गुप्त सिक्के और शिलालेख मुख्य रूप से यूपी में पाए गए हैं।
- गुप्त उत्तर प्रदेश में संभवतः कुषाणों के सामंत थे, और ऐसा लगता है कि वे बिना किसी व्यापक समय अंतराल के सफल हुए हैं।
- चंद्रगुप्त की विजयों को उनके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा रचित एक लंबी स्तुति से जाना जाता है जो इलाहाबाद में एक अशोक स्तंभ पर खुदा हुआ है।
  - इलाहाबाद स्तंभ के शिलालेख में, समुद्रगुप्त को पृथ्वी पर निवास करने वाले देवता के रूप में संदर्भित किया गया है।

### वंशवादी इतिहास

प्रमुख राजा	ऐतिहासिक तथ्य
श्री गुप्त	<ul style="list-style-type: none"> <li>तीसरी शताब्दी ई. श्री गुप्त ने राजवंश की स्थापना की।</li> <li>उपाधि: 'महाराजा'</li> </ul>
चंद्रगुप्त प्रथम	<ul style="list-style-type: none"> <li>'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।</li> <li>शासनकाल: 319 ईस्वी से 334 ईस्वी तक</li> <li>लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह</li> <li>गुप्त साम्राज्य के वास्तविक संस्थापक के रूप में जाने जाते हैं</li> </ul>
समुद्र गुप्त	<ul style="list-style-type: none"> <li>वी.ए.स्मिथ (आयरिश इंडोलॉजिस्ट और कला इतिहासकार) द्वारा इन्हें 'भारतीय नेपोलियन' कहा गया।</li> <li>कार्यकाल: 335 ईस्वी से 380 ईस्वी तक</li> <li>इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख में उनकी व्यापक विजय का उल्लेख है।</li> </ul>
चंद्रगुप्त द्वितीय	<ul style="list-style-type: none"> <li>शासनकाल: 380-412 ई.</li> <li>अपने दरबार में नौ रत्न (नवरत्न) रखे - कालिदास, अमरसिंह, धनवंतरि, वराहमिंहिर, वररुचि, घटकर्ण, क्षप्राणक, वेलाभट्ट और शंकु।</li> <li>उपाधि: 'विक्रमादित्य'</li> <li>गुप्त साम्राज्य का प्रथम शासक जिसने चांदी के सिक्के चलाए।</li> </ul>
कुमारगुप्त प्रथम	<ul style="list-style-type: none"> <li>शासनकाल: 413 ई. से 455 ई.</li> <li>नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना</li> <li>इसे शकरादित्य भी कहा जाता है।</li> <li>उसके शासन काल में हूणों ने भारत पर आक्रमण किया था</li> </ul>
स्कन्दगुप्त	<ul style="list-style-type: none"> <li>शासनकाल: 455 ई. - 467 ई.</li> <li>वह एक 'वैष्णव' थे।</li> <li>अपने पूर्ववर्तियों की सहिष्णु नीति को अपनाया।</li> </ul>

### गुप्त कला की

- सारनाथ में बड़ी संख्या में बुद्ध की मूर्तियाँ मिली हैं, और उनमें से एक को पूरे भारत में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।
- मधुरा और अन्य स्थानों पर बुद्ध की पत्थर और कांस्य की मूर्तियाँ भी मिली हैं।
- देवगढ़ मंदिर (झांसी जिले) के कुछ बेहतरीन पैनलों में शिव, विष्णु और अन्य ब्राह्मण देवताओं की मूर्तियाँ गढ़ी गई हैं।

### उत्तरप्रदेश में मिले गुप्त काल के मंदिर के अवशेष

- 2021 में, एएसआई ने यूपी के एटा जिले के बिलसर गांव में गुप्त काल (5 वीं शताब्दी) के एक प्राचीन मंदिर के अवशेषों की खोज की।
- 1928 में एएसआई द्वारा बिलसहर साइट को 'संरक्षित' घोषित किया गया था।
- दो स्तंभों की खुदाई की गई थी, जिन पर कुमारगुप्त प्रथम के बारे में 'संख लिपि' (शंख लिपि) में एक शिलालेख है जो 5 वीं शताब्दी ईस्वी पूर्व का है।

### उत्तर गुप्तकाल

#### हूणों का आक्रमण

- छठी शताब्दी ई. की शुरुआत में जब गुप्त साम्राज्य का विघटन हो रहा था, हूणों ने अपने शासक तोरमण के अधीन बार-बार हमला किया।
- हालांकि अभी तक कोई निर्णायक सबूत नहीं है कि तोरमण एक हूण था।
- इस बार हूणों ने कश्मीर, फिर पंजाब, राजस्थान और म.प्र. और उ.प्र. के कुछ हिस्सों पर कब्जा कर लिया।
- भानु गुप्त को तोरमण से लड़ना पड़ा।
- मौखिरियों ने कन्नौज के आसपास पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र पर कब्जा कर लिया।
- कन्नौज के मौखिरी वंश के राजा ने हूणों को हराकर उत्तर भारत को मुक्त कराया।

#### वर्धन / पृष्ठभूति राजवंश

- हर्ष या हर्षवर्धन (590-647) ने उत्तरी भारत पर चालीस से अधिक वर्षों तक शासन किया।
  - प्रभाकर वर्धन के पुत्र
  - राज्यवर्धन के छोटे भाई, थानेश्वर के राजा।
- उसकी शक्ति के चरम पर, उसका राज्य पंजाब, बंगाल, उड़ीसा और पूरे सिन्धु-गंगा के मैदान में फैला हुआ था।
- हर्षवर्धन के राज्याभिषेक के साथ, थानेश्वर और कन्नौज के वंश का विलय हो गया।
- कन्नौज उत्तर भारत का एक प्रमुख शहर बन गया और सदियों तक इसकी महिमा केवल पाटलिपुत्र के बराबर ही रही।
  - कन्नौज पर शासन करने की हर राज्य की इच्छा।

- चीनी यात्री, हेन त्सांग ने हर्ष के समय देश का दौरा किया और उसके शासन की प्रशंसा की।
- हर्ष के बाद उत्तर भारत में फिर से राजनीतिक अस्थिरता आ गई।
- 8वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में, यशोवर्मन ने कन्नौज पर अपना वर्चस्व स्थापित किया।
  - लगभग पूरा भारत उसके शासन में आ गया और कन्नौज ने अपनी खोई हुई प्रसिद्धि और गौरव वापस पा लिया।
  - ललितादित्य मुक्तपीड के सहयोग से उन्होंने अरब आक्रमणों से भारत की रक्षा की।
- उस दौरान चीन, तुर्किस्तान से लेकर स्पेन के कार्बोडा शहर तक अरब की ताकत से पड़ोसी राज्यों में भय व्याप्त था।
- बाद में, ललितादित्य ने 740 ईस्वी में उसे गद्दी से उतार कर उसकी हत्या कर दी।
- कन्नौज पर नियंत्रण पाने के लिए बंगाल के पालों, दक्षिण के राष्ट्रकूटों और गुजरात के गुर्जर प्रतिहारों के बीच एक लंबी प्रतिद्वंद्विता थी।

## उत्तर प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास

### प्रारम्भिक मध्यकालीन युग

#### कन्नौजों के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष

- 8वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान, कन्नौज पर नियंत्रण के लिए भारत के तीन प्रमुख साम्राज्यों अर्थात् पाल, प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों के बीच संघर्ष हुआ।
- पालों ने भारत के पूर्वी भागों पर शासन किया।
- प्रतिहारों ने पश्चिमी भारत (अवंती-जालोर क्षेत्र) को नियंत्रित किया।
- राष्ट्रकूटों ने भारत के दक्षिण क्षेत्र पर शासन किया।
- इन तीन राजवंशों के बीच कन्नौज पर नियंत्रण के लिए संघर्ष को भारतीय इतिहास में त्रिपक्षीय संघर्ष के रूप में जाना जाता है।
- 9वीं शताब्दी के अंत तक पालों के साथ राष्ट्रकूटों की शक्ति घटती गई।
- और त्रिपक्षीय संघर्ष के अंत तक, प्रतिहार विजयी हुए और खुद को मध्य भारत के शासकों के रूप में स्थापित किया।

#### गुर्जर प्रतिहार

- नागभट्ट ने पहले उज्जैन में और बाद में 8वीं से 11वीं शताब्दी के दौरान कन्नौज में शासन किया।
- 9वीं शताब्दी की शुरुआत के जटिल और बुरी तरह से प्रलेखित युद्धों में प्रतिहारों, राष्ट्रकूटों और पालों को शामिल करते हुए, नागभट्ट द्वितीय ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- उसने सिंधु-गंगा के मैदान पर आक्रमण किया और स्थानीय राजा चक्रयुध जिसे पाल शासक धर्मपाल का संरक्षण प्राप्त था, से कन्नौज छीन लिया।

- राष्ट्रकूटों की शक्ति कमजोर होने के साथ, नागभट्ट द्वितीय उत्तरी भारत का सबसे शक्तिशाली शासक बन गया और उसने कन्नौज में अपनी नई राजधानी की स्थापना की।
- वंशवादी संघर्ष से प्रतिहारों की शक्ति स्पष्ट रूप से कमजोर हो गई थी।
- राष्ट्रकूट राजा इंद्र III के नेतृत्व में दक्षिण पर बड़े हमले ने इसे और कमजोर कर दिया गया, जिसने लगभग 916 में कन्नौज पर अधिकार कर लिया।
- उनका अंतिम महत्वपूर्ण राजा, राज्यपाल, 1018 में गजनी के महमूद द्वारा कन्नौज से खदेड़ दिया गया था और बाद में चंदेल राजा विद्याधर की सेना द्वारा मारा गया था।
- लगभग एक पीढ़ी तक इलाहाबाद के क्षेत्र में स्पष्ट रूप से एक छोटी प्रतिहार रियासत बची रही।

#### कन्नौज का महत्व

- कन्नौज गंगा व्यापार मार्ग पर स्थित था और रेशम मार्ग से जुड़ा था।
- इसने कन्नौज को रणनीतिक और व्यावसायिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण बना दिया।

## उत्तर प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास

- आगरा - 1504 में सुल्तान सिकंदर लोदी द्वारा स्थापित।
- सिकंदर लोदी के बाद, इब्राहिम लोदी आगरा के सिंहासन पर बैठा, जिसे 1526 में पानीपत की पहली लडाई में बाबर ने हराया और बाबर ने मुगल साम्राज्य की स्थापना की।
- आगरा - मुगल काल के दौरान शिक्षा का मुख्य केंद्र।
- मुगल काल के दौरान आगरा के आसपास के क्षेत्रों में नील की खेती की जाती थी।
- मुगल इतिहासकारों ने उत्तर प्रदेश को हिंदुस्तान कहा।
- आगरा का किला - अकबर द्वारा बनवाया गया।
- नूरजहाँ ने आगरा में अपने पिता एतमाद-उद-दौला का मकबरा बनवाया।
- 'ताजमहल', दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास और आगरा की 'मोती मस्जिद' का निर्माण शाहजहाँ ने करवाया।
- बारहवीं शताब्दी के अंत तक, कुतुबुद्दीन ऐबक ने कालपी (जालौन जिला) पर कब्जा कर लिया और इसे दिल्ली सल्तनत का हिस्सा बना लिया।
- अकबर के नवरत्नों में बीरबल और टोडरमल उत्तर प्रदेश के थे।
- बीरबल कालपी के थे जहाँ बीरबल के रंग महल और मुगल टकसाल के प्रमाण मिले हैं।
- जौनपुर - फिरोज शाह तुगलक।
  - उर्फ शिराज-ए-हिंद शर्की वंश के शासनकाल के दौरान।
- झांसी - ओरछा शासक बीर सिंह बुंदेला - 1613 में।
  - झांसी में लक्ष्मी बाई का महल, महादेव मंदिर और मेहदी बाग हैं।

- शाहजहाँ - आगरा से दिल्ली तक मुगल राजधानी।
- लखनऊ के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह थे, जिन्हें लॉर्ड डलहौजी ने 1856 में अंग्रेजों ने लखनऊ से हटा दिया था।
- अकबर ने सिकंदरा (आगरा का एक उपनगर) में अपना मकबरा बनवाया जिसे बाद में सम्राट जहांगीर ने 1613 में पूरा किया।
- अटाला मस्जिद, जामा मस्जिद या जामा मस्जिद या बारी मस्जिद और लाल दरवाजा शर्की वंश के प्रसिद्ध स्मारक हैं।
- जौनपुर की अटाला मस्जिद और झांगरी मस्जिद का निर्माण इब्राहिम शाह शर्की ने करवाया था।
- बदायूं की जामा मस्जिद का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया था।
- 1707 (औरंगजेब की मृत्यु से) से 1757 (प्लासी की लड़ाई) तक वर्तमान उत्तर प्रदेश में पांच स्वतंत्र राज्य थे।
- 'इलाहाबाद की संधि' - 1765 में ब्रिटिश और मुगल शासक शाह आलम द्वितीय के बीच।
- शुजा-उद-दौला की मृत्यु के बाद, आसफ-उद-दौला 1775 में अवध का नवाब था।
- आसफ-उद-दौला ने फैजाबाद की संधि (1775) द्वारा बनारस का क्षेत्र अंग्रेजों को सौंप दिया।
- मुहर्रम मनाने के लिए आसफ-उद-दौला ने 1784 में लखनऊ में इमामबाड़े का निर्माण किया था।
- तैमूर और चंगेज खान के वंशज बाबर ने दिल्ली पर आक्रमण किया, इब्राहिम लोदी को हराया और मुगल साम्राज्य की स्थापना की जो अफगानिस्तान से बांगलादेश तक फैला था, जिसकी शक्ति उत्तर प्रदेश में केंद्रीकृत थी।

- मुगल मध्य एशियाई तुर्क वंश के थे।
- मुगल राजा हुमायूँ को सूरी वंश के शेर शाह सूरी ने पराजित किया और इस प्रकार उत्तर प्रदेश का नियंत्रण सूरी वंश के पास चला गया।
- शेर शाह सूरी और इस्लाम शाह सूरी ने ग्वालियर से अपनी राजधानी के रूप में शासन किया।
- इस्लाम शाह सूरी की मृत्यु ने हेमू जिसे हेमचंद्र विक्रमादित्य के नाम से जाना जाता था, के लिए दिल्ली पर शासन करने का मार्ग प्रशस्त किया।
- पानीपत की दूसरी लड़ाई में, मुगल वंश के सबसे प्रमुख राजा-अकबर ने हेमू से सत्ता हथिया ली और आगरा के पास फतेहपुर सीकरी को अपनी राजधानी बनाया।
- अकबर के शासनकाल को सांस्कृतिक, और कला विकास के शासन के रूप में माना जाता है।
- मुगल साम्राज्य का पतन, मराठों और रोहिल्लाओं के शासन के साथ-साथ उनकी पारस्परिक प्रतिद्वंद्विता का कारण बना जो दूसरे एंगलो-इंडियन युद्ध के साथ समाप्त हो गया क्योंकि मराठों का अधिकांश शासन उत्तर प्रदेश सहित ब्रिटिश साम्राज्य के हाथ में चला गया।
- यूपी में मुस्लिम शासन से संबंधित प्रमुख स्थल:
  - शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया ताजमहल सबसे बड़ी स्थापत्य उपलब्धि है।
  - फतेहपुर सीकरी में बुलंद दरवाजा।
  - एक ब्राह्मण, रामानंद द्वारा स्थापित भक्ति संप्रदाय।
  - कबीर ने सभी धर्मों के लिए एकता का उपदेश दिया।



## अवध पर विजय

- 1757 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद वर्तमान उत्तर प्रदेश में चार स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई।
  - मेरठ और बरेली का उत्तरी क्षेत्र: पठान सरदार नजीब खान द्वारा शासित।
  - रोहिलखंड (मेरठ और दोआब का रोहिल प्रदेश): रहमत खान द्वारा शासित।
  - मध्य दोआब क्षेत्र: अवध के नवाब द्वारा शासित।
  - बुंदेलखंड क्षेत्र पर मराठों का शासन था।
- उत्तरी भारत में, पानीपत की तीसरी लड़ाई (1761) और बक्सर की लड़ाई (1764) ने आधुनिक इतिहास में प्रमुख भूमिका निभाई।
- बक्सर की लड़ाई में अंग्रेजों ने मुगल बादशाह शाह आलम ॥ और अवध के नवाब शुजा-उद-दौला और बंगल के नवाब मीर कासिम को हराया।

## अवध का विलय (1856)

### पृष्ठभूमि

- अवध:** उत्तर भारत के अवध क्षेत्र में रियासत।
- मुगल साम्राज्य के पतन के बाद, अवध में स्थानीय राज्यपालों ने अधिक स्वायत्ता का दावा करना शुरू कर दिया।
- आखिरकार, अवध मध्य और निचले दोआब की भूमि को नियंत्रित करने वाली एक स्वतंत्र राज्य व्यवस्था में परिवर्तित हो गया।
- राजधानी:** फैसलाबाद
- ब्रिटिश एजेंट, जिन्हें आधिकारिक तौर पर "रेजिडेंट" के रूप में जाना जाता था, लखनऊ में उनकी सीट थी।
- अवध के नवाब को सबसे अमीर राजकुमारों में से एक माना जाता था।
- बक्सर की लड़ाई के बाद, अंग्रेजों ने पूरे क्षेत्र में खुद को मुख्य शक्ति के रूप में स्थापित किया।

### राज्य-हरण

- मई 1816:** अवध एक ब्रिटिश संरक्षित राज्य बन गया।
- वाजिद अली शाह 1822 से अवध के नवाब थे।
  - वह दसवें और अंतिम नवाब थे।
  - वह एक कुशल कवि और नाटककार और ललित कलाओं के संरक्षक थे। वह खराब प्रशासक नहीं थे, लेकिन अवध के ब्रिटिश रेजिडेंट ने उसके प्रशासन की एक गलत रिपोर्ट दी।

- अंग्रेज किसी बहाने से राज्य पर कब्जा करने की उम्मीद कर रहे थे।
- डलहौजी के व्यपगत सिद्धांत के अनुसार, यदि किसी राज्य में कुशासन भी होता था तो अंग्रेज उस राज्य पर कब्जा कर लेते।
- फरवरी 1856 में कुप्रशासन के आधार पर अवध का बिना रक्तपात के विलय कर लिया गया।
- वाजिद अली शाह को कलकत्ता निर्वासित कर दिया गया था जहाँ पर उन्होंने बचा हुआ जीवन व्यतीत किया।

### परिणाम

- अवध के विलय ने ब्रिटिश और स्थानीय आबादी के बीच मौजूदा तनाव को और बढ़ा दिया।
- 1857 के विद्रोह के रूप में बढ़ता हुआ असंतोष, अवध विद्रोह के कई केंद्र बिंदुओं में से एक था।
- अवध के क्षेत्र को उत्तर-पश्चिमी प्रांतों में मिलाने के बाद, इसने उत्तर-पश्चिमी प्रांतों और अवध के बड़े प्रांत का गठन किया।
- 1902: अवध का नाम बदलकर संयुक्त प्रांत आगरा और अवध रखा गया।
- 1904: पूर्व उत्तर-पश्चिमी प्रांतों और अवध के अनुरूप नए संयुक्त प्रांत के भीतर के क्षेत्र का नाम बदलकर आगरा प्रांत कर दिया गया।

## उत्तर प्रदेश में 1857 का विद्रोह

### उत्तर प्रदेश में 1857 के विद्रोह के केंद्र

#### मेरठ

- 10 मई 1857 को मेरठ में सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया।
- तीसरी घुड़सवार सेना के नेतृत्व में भारतीय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।
- यूरोपीय कनिष्ठ अधिकारी जिन्होंने शुरूआत में विद्रोह को दबाने का प्रयास किया, विद्रोहियों के द्वारा मारे गए।
- बाजार में भीड़ ने ऑफ-ज्यूटी सैनिकों पर हमला किया।
- लगभग 50 भारतीय नागरिक जिन्होंने अपने नियोक्ताओं को बचाने या छिपाने की कोशिश की, सिपाहियों द्वारा मारे गए।
- विद्रोह को दबाने वाले ब्रिटिश अधिकारी: सर कॉलिन कैपबेल

## कानपुर

- नेतृत्व: नाना साहब, पेशवा बाजी राव द्वितीय के दत्तक पुत्र।
  - जून 1857: नाना साहब को कानपुर का पेशवा घोषित किया गया।
  - विद्रोह में शामिल होने का कारण: अंग्रेजों द्वारा उन्हें पेशन से वंचित करना।
- उन्होंने कानपुर पर कब्जा कर लिया और खुद को पेशवा घोषित कर दिया।
- सैनिकों के आने के बाद अंग्रेजों ने कानपुर पर पुनः अधिकार कर लिया।
- विद्रोह को भयानक प्रतिशोध के साथ दबा दिया गया था।
- विद्रोहियों को या तो फाँसी पर लटका दिया गया या तोपों द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया।
- नाना साहब भाग निकले, लेकिन सेनापति तांत्या टोपे ने संघर्ष जारी रखा।
- 6 नवंबर 1857 को ग्वालियर रेजिमेंट के विद्रोहियों ने तांत्या टोपे के नेतृत्व में कानपुर पर कब्जा कर लिया।
- विद्रोह का दमन: दिसंबर 1857 में सर कॉलिन कैंपबेल द्वारा।
- तांत्या टोपे को अंततः पराजित किया गया, गिरफ्तार किया गया और फाँसी पर लटका दिया गया।

## झांसी

- 4 अप्रैल 1858: झांसी पर सर हृष्ण रोज ने कब्जा कर लिया।
- रानी लक्ष्मी बाई ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया जब अंग्रेजों ने उनके दत्तक पुत्र के झांसी के सिंहासन के दावे को स्वीकार करने से इनकार कर दिया।
- उन्होंने बहादुरी से लड़ाई लड़ी लेकिन अंग्रेजों से हार गई।
- वह तांत्या टोपे से जुड़ गई और उन्होंने साथ में ग्वालियर तक मार्च किया और उस पर कब्जा कर लिया।
  - अंग्रेजों के वफादार सहयोगी सिंधिया को खदेड़ दिया गया।
- झांसी की रानी की मृत्यु 17 जून 1858 को ब्रिटिश जनरल हृष्ण रोज के खिलाफ लड़ते हुए हुई और ग्वालियर पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया।

## 1857 के विद्रोह के नेताओं और केंद्रों की सूची

विद्रोह का केंद्र	नेतृत्व
कानपुर	नाना साहब, तात्या टोपे, अज़ीमुल्लाह
लखनऊ	बेगम हजरत महल
झांसी	रानी लक्ष्मीबाई
बरेली	खान बहादुर खान
फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्लाह
कालपी	तांत्या टोपे
इलाहाबाद	मौलवी लियाकत अली
मेरठ	कदम सिंह
मथुरा	देवी सिंह

## 1857 के विद्रोह के बाद उत्तर प्रदेश में संस्थागत परिवर्तन

- 1857 की क्रांति के बाद ब्रिटिश ताज ने कंपनी से भारत पर शासन करने का अधिकार वापस ले लिया।
- 1 नवंबर 1858: लॉर्ड कैनिंग द्वारा ब्रिटिश रानी की घोषणा को पढ़ने के लिए इलाहाबाद (प्रयागराज) में भव्य दरबार का आयोजन किया गया।
- 1858 में दिल्ली डिवीजन को उत्तर-पश्चिम से अलग कर दिया गया और इसकी राजधानी को आगरा से इलाहाबाद (प्रयागराज) में स्थानांतरित कर दिया गया।
- 1858: उत्तर प्रदेश को दो भागों अवध और उत्तर पश्चिमी प्रांतों में विभाजित किया गया था।
  - इन प्रांतों के शासक को क्रमशः मुख्य आयुक्त और लेफ्टिनेंट गवर्नर कहा जाता था।

## 1857 के विद्रोह के बाद राष्ट्रवाद का विकास

- 1857 के विद्रोह के बाद उत्तर प्रदेश में कई ऐसी घटनाएं हुईं, जिससे राष्ट्रवाद का विकास हुआ।
  - 1867: मुहम्मद कासिम नानौतवी और राशिद अहमद ने उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के देवबंद में मदरसा की स्थापना की।
    - उन्होंने दारुल उलूम का देवबंद आंदोलन शुरू किया और अंग्रेजों के खिलाफ जिहाद शुरू किया।
    - उद्देश्य: मुस्लिम समुदाय का नैतिक और धार्मिक नवीनीकरण।
    - यह आंदोलन सर सैयद अहमद खान के अलीगढ़ आंदोलन के खिलाफ था।
  - 1864: वैज्ञानिक समाज और 1875 में सर सैयद अहमद खान द्वारा अलीगढ़ मुस्लिम एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की गई।
    - उन्होंने तहज़ीब-उल-अख़लाक और भारत के वफादार मुसलमान प्रकाशित किए।
  - 1861: राधास्वामी आंदोलन की शुरुआत शिव दयाल साहब ने की थी।
  - भारतेणु हरिश्चंद्र ने कवि वचन सुध (1867) और हरिश्चंद्र पत्रिका (1872) प्रकाशित की, बाल कृष्ण भट्ट ने 1877 में हिंदी प्रदीप प्रकाशित किया।
  - 1898: एनी बेसेंट द्वारा बनारस में सेंट्रल हिंदू स्कूल की स्थापना की गई।
    - 1916: मदन मोहन मालवीय द्वारा इस कॉलेज को आगे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित किया गया।
- इन संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों और आंदोलनों ने लोगों में राष्ट्रवादी भावनाओं को स्थापित करने में मदद की।

## उत्तर प्रदेश में किसान आन्दोलन

- अवध (1856) और 1857 के विद्रोह के विलय के बाद, अवध तालुकदारों को उनकी भूमि वापस मिल गई।
- उन्नीसवीं सदी के उत्तराध में प्रांत के कृषि समाज पर तालुकदारों या बड़े जर्मांदारों की पकड़ मजबूत हुई।

- अधिकांश काश्तकारों को उच्च लगान, बेदखली, अवैध लेवी, नवीनीकरण शुल्क या नज़राना के अधीन किया गया था।
- द्वितीय विश्व युद्ध के साथ और उसके बाद भोजन और अन्य आवश्यकताओं की उच्च कीमत ने उत्पीड़न

## किसान सभा आंदोलन

- मुख्य रूप से होमरूल कार्यकर्ताओं के प्रयासों के कारण, यूपी में किसान सभाओं का आयोजन किया गया।
- 1918: उत्तर प्रदेश किसान सभा का आयोजन किया गया।
- गौरी शंकर मिश्रा, इंद्र नारायण द्विवेदी, मदन मोहन मालवीय, कदम सिंह और नाना साहब द्वारा शुरू की गई।
- 1919 के अंत में, प्रतापगढ़ जिले में नाई-धोबी बंद (सामाजिक बहिष्कार का एक रूप) की रिपोर्ट में किसान गतिविधि का पहला संकेत स्पष्ट था।
- जून 1919 तक, यूपी किसान सभा की 450 शाखाएँ थीं।
- अन्य प्रमुख नेताओं में झिंगुरी सिंह, दुर्गापाल सिंह और बाबा रामचंद्र शामिल थे।
- जून 1920 में, बाबा रामचंद्र ने नेहरू से इन गांवों का दौरा करने का आग्रह किया।
- इन यात्राओं के दौरान, नेहरू ने ग्रामीणों के साथ घनिष्ठ संपर्क विकसित किया।
- प्रतापगढ़ के डिए कमिश्नर मेहता से किसानों को सहानुभूति मिली, जिन्होंने उन्हें भेजी गई शिकायतों की जांच करने का वादा किया।
  - प्रतापगढ़ जिले के ग्राम रूर में किसान सभा गतिविधि का केंद्र बनी
  - गौरी शंकर इस अवधि के दौरान प्रतापगढ़ में सक्रिय थे, और कुछ महत्वपूर्ण किरायेदार शिकायतों जैसे कि बेदखली और नज़राना पर मेहता के साथ एक समझौता करने की प्रक्रिया में थे।
  - मेहता ने चोरी का मामला वापस लिया और जमींदारों पर अपने तरीके बदलने का दबाव बनाने का प्रयास किया
  - इस आसान जीत ने आंदोलन को नया आत्मविश्वास दिया और यह आगे बढ़ता गया।
- अक्टूबर 1920: राष्ट्रवादी रैंकों में मतभेदों के कारण प्रतापगढ़ में अवधि किसान सभा अस्तित्व में आई।
  - कलकत्ता में कांग्रेस ने असहयोग का रास्ता चुना था और यूपी के कई राष्ट्रवादियों ने इसके लिए खुद को प्रतिबद्ध किया था।
  - लेकिन मालवीय जैसे अन्य लोग भी थे जिन्होंने संवैधानिक आंदोलन को प्राथमिकता दी। ये मतभेद यूपी किसान सभा में भी दिखाई दिए और जल्द ही असहयोगियों ने अवधि किसान सभा का गठन किया।
  - यह नया निकाय अपने बैनर तले अवधि में उभरी सभी किसान सभाओं को एकीकृत करने में सफल रहा।

- अवधि किसान सभा ने किसानों से कहा कि वे बेदखली की भूमि जोतने से मना करें, हली और बेगार न दें, इन शर्तों को न मानने वालों का बहिष्कार करें और पंचायतों के माध्यम से अपने विवादों का समाधान करें।
- जन सभाओं और लामबंदी के पहले के रूपों से, गतिविधि के पैटर्न में तेजी से बदलाव जनवरी 1921 में बाज़ारों, घरों, अन्न भंडारों की लूट और पुलिस के साथ झड़पों में हुआ।
- गतिविधि के केंद्र राय बरेली, फैजाबाद और सुल्तानपुर जिले थे।
- अवधि में 1921 के शुरुआती महीनों में जब किसान गतिविधि अपने चरम पर थी, असहयोग सभा और किसान रैली के बीच अंतर करना मुश्किल था।
- आंशिक रूप से सरकारी दमन के कारण और आंशिक रूप से अवधि किराया (संशोधन) अधिनियम के पारित होने के कारण आंदोलन में जल्द ही गिरावट आई।

## एका आंदोलन

- 1921: मदारी पासी द्वारा शुरू किया गया
- क्षेत्र: हरदोई, बहराइच, सीतापुर
- यह एक किसान आंदोलन था।
- मुद्दे**
  - उच्च किराया - दर्ज दरों से 50 प्रतिशत अधिक
  - राजस्व वसूली के आरोप में ठेकेदारों का उत्पीड़न
  - शेयर-किराए का अभ्यास।
- एका या एकता आंदोलन की बैठकों में एक प्रतीकात्मक धार्मिक अनुष्ठान शामिल था जिसमें इकट्ठे हुए किसानों ने कसम खाई थी कि वे:
  - केवल रिकॉर्ड किए गए किराए का भुगतान करें लेकिन समय पर भुगतान करेंगे
  - बेदखल होने पर जमीन नहीं छोड़ें;
  - जबरन मजदूरी करने से इंकार
  - अपराधियों की कोई मदद न करें
  - पंचायत के निर्णयों का पालन करें।
- नेतृत्व: मदारीपासी और अन्य निम्न जाति के नेताओं, और कई छोटे जमींदारों ने किया।
- मार्च 1922 तक, अधिकारियों द्वारा गंभीर दमन ने आंदोलन को समाप्त कर दिया।

## नाई-धोबी बंद आंदोलन

- क्षेत्र: उत्तर प्रदेश का प्रतापगढ़ जिला।
- किसान अवधि में तालुकदारों और जमींदारों के खिलाफ थे क्योंकि वे अधिक लगान मांग रहे थे।
- नेता: बाबा रामचंद्र, एक संन्यासी जो पहले एक गिरमिटिया मजदूर के रूप में फिजी गया था।

- किसानों ने कई क्षेत्रों में नाई-धोबी बंद आंदोलन शुरू किया।
- पंचायत जमींदारों को नाइयों और धोबी की सेवाओं से वंचित करने के लिए आयोजित।
- बेगार: यह एक ऐसी स्थिति है जहां कोई व्यक्ति पूरी तरह से मुआवजा दिए बिना काम करता है।
  - कोई खाद्यान्न, मजदूरी और भुगतान का कोई अन्य रूप नहीं था।
- अवध के अधिकांश किसान तालुकदारों और जमींदारों के खेतों में काम कर रहे थे, जो भिखारी थे।
- बाबा रामचंद्र ने निम्नलिखित शिकायतों के साथ किसान आंदोलन का गठन किया:
  - राजस्व में कमी।
  - बेगार का उन्मूलन।
  - दमनकारी जमींदारों का सामाजिक बहिष्कार।

### अखिल भारतीय किसान सभा (AIKS)

- 1936: कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में अखिल भारतीय किसान सभा का गठन किया गया
- अध्यक्ष:** स्वामी सहजानंद
- सचिव:** एनजी रंगा।
- अखिल भारतीय किसान सभा को 'अखिल भारतीय किसान सभा' के नाम से भी जाना जाता है।
- उद्देश्य:**
  - जमींदारी प्रथा को समाप्त करने के लिए,
  - भू-राजस्व को कम करने के लिए,
  - साख को संस्थागत बनाना।

### भारत में राष्ट्रीय कांग्रेस

#### उत्तर प्रदेश में आयोजित कांग्रेस के सत्र

स्थान	वर्ष	अध्यक्ष	महत्व
इलाहाबाद	1888	जॉर्ज यूल	प्रथम अंग्रेजी राष्ट्रपति
इलाहाबाद	1892	डब्ल्यू सी. बनर्जी	
लखनऊ	1899	रोमेश चंद्र दत्त	
बनारस	1905	गोपाल कृष्ण गोखले	सरकार के खिलाफ स्वदेशी आंदोलन की औपचारिक घोषणा
इलाहाबाद	1910	सर विलियम वेडरबर्न	
लखनऊ	1916	अंबिका चरण मजूमदार	<ul style="list-style-type: none"> <li>दो गुटों के बीच एकता-कांग्रेस के नरमपंथी और चरमपंथी</li> <li>लखनऊ समझौता b/w कांग्रेस और मुस्लिम लीग राजनीतिक सहमति बनाने के लिए</li> </ul>
कानपुर	1925	सरोजिनी नायडू	पहली भारतीय महिला अध्यक्ष
लखनऊ	1936	पं. जवाहर लाल नेहरू	जवाहर लाल नेहरू द्वारा समाजवादी विचारों को बढ़ावा
मेरठ	1946	आचार्य जेबी-कृपलानी	आजादी से पहले का आखिरी अधिवेशन

### AIKS और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) के बीच दरार

- कई कांग्रेस नेता खुद जमींदार थे, जबकि किसान और मजदूर दूसरे वर्ग से आते थे।
- कांग्रेस के भीतर यह वर्ग संघर्ष गांधी, नेहरू और अन्य लोगों द्वारा कल्पित योजनाओं को लागू करने में बाधा था।
- कांग्रेस उन वादों को पूरा करने में विफल रही जो उन्होंने किसानों से किए थे।
  - कांग्रेस सरकार से किसानों का मोहभंग हो गया।
- इसलिए, अखिल भारतीय किसान सभा ने INC द्वारा विश्वासघात महसूस किया और इसीलिए, जब 1942 में, महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान किया, स्वामी सहजानंद सरस्वती जैसे किसान नेताओं ने किसानों से गांधी या INC का समर्थन न करने की अपील की।
- किसान आंदोलन में समाजवादियों और कम्युनिस्टों का वर्चस्व होने लगा और कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस और एआईकेएस के बीच दरार स्पष्ट हो गई।
- मई 1942: भाकपा ने पूरे देश में अखिल भारतीय किसान सभा का कार्यभार संभाला।

किसान आंदोलन	वर्ष	प्रमुख नेता
उत्तर प्रदेश किसान सभा	1918	गौरी शंकर मिश्र, इंद्र नारायण द्विवेदी, मदन मोहन मालवीय
अवध किसान सभा	1920	बाबा रामचंद्र
एका आंदोलन	1921	मदारी रामचंद्र
अखिल भारतीय किसान सभा	1936	स्वामी सहजानंद, एन.जी. रंगा, इंदुलाल याज्ञिक (लखनऊ)

## लखनऊ अधिवेशन, 1916

- इस अधिवेशन ने लगभग एक दशक के बाद फिर से कांग्रेस में नरमपंथियों और उग्रवादियों को एक ही मंच पर ला दिया।
- कांग्रेस और अखिल भारतीय मुस्लिम लीग ने लखनऊ समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- मुस्लिम लीग सुधार करने के लिए ब्रिटिश सरकार पर संवैधानिक दबाव डालने के लिए कांग्रेस के साथ संयुक्त मंच चाहती थी।
  - उद्देश्य: ऐसी संयुक्त मांग से हिंदू-मुस्लिम एकता का आभास होगा।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने लखनऊ समझौते में सहमति बनाई।
- मुख्य बिंदु:**
  - भारत में स्वशासन होगा।
  - मुसलमानों को केंद्र सरकार आदि में एक तिहाई प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए।

## यूपी में क्रांतिकारी आंदोलन

### काकोरी घड़यंत्र

- अगस्त 1925 : अगस्त 1925: शाहजहांपुर से लखनऊ जा रही काकोरी एक्सप्रेस में सशस्त्र डकैती हुई, जिसमें विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर एकत्र किए गए धन को लखनऊ में जमा किया जाना था।
- डकैती का उद्देश्य: HSRA की गतिविधियों को वित्तपोषित करना
- बिस्मिल, खान और 10 से अधिक अन्य क्रांतिकारियों ने ट्रेन को रोक दिया और उसमें मिली नकदी को लेकर भाग गए।
- एक महीने के भीतर एचएसआरए के कई सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया।
- सितंबर 1926: बिस्मिल को गिरफ्तार कर लिया गया लेकिन खान फरार हो गया और बाद में उसे गिरफ्तार कर लिया गया।
- करीब 1.5 साल तक केस की सुनवाई चलती रही।
- यह अप्रैल 1927 में समाप्त हुआ, बिस्मिल, खान, राजेंद्र लाहिड़ी और रोशन सिंह को मौत की सजा दी गई, और अन्य को उम्रकैद की सजा दी गई।

### राम प्रसाद बिस्मिल

- राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म एक नगर पालिका कर्मचारी मुरलीधर और उनकी पत्नी के घर हुआ था।
- मौलिकी से घर पर हिंदी और उर्दू सीखी।
- दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज में शामिल हुए।
  - इसका उन पर गहरा प्रभाव पड़ा।
- परमानंद की मौत की सजा पर, उन्होंने 'मेरा जन्म' (मेरा जन्म) शीर्षक से एक हिंदी कविता की रचना की।

- उन्होंने अंग्रेजी और बंगाली कार्यों का हिंदी में अनुवाद किया।
- बिस्मिल 1918 के मैनपुरी घड़यंत्र में शामिल थे जिसमें पुलिस ने बिस्मिल सहित कुछ युवाओं को ऐसी किताबें बेचते हुए पाया, जिन पर सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया था।
  - बिस्मिल यमुना नदी में कूदकर गिरफ्तारी से बच गए।
- उन्होंने अहमदाबाद में कांग्रेस के 1921 के सत्र में भाग लिया।
- वह सचिंद्र नाथ सान्याल और जदूगोपाल मुखर्जी के साथ हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के मुख्य संस्थापकों में से एक थे।
- संगठन की स्थापना 1924 में हुई थी और इसका संविधान मुख्य रूप से बिस्मिल द्वारा तैयार किया गया था।
- एचआरए ने कई पर्चे तैयार किए जो लोगों को क्रांतिकारी गतिविधियों के माध्यम से सरकार से लड़ने के लिए प्रेरित करने की मांग करते थे।
- इन्हें काकोरी घड़यंत्र केस के लिए सबसे ज्यादा याद किया जाता है।
- सरकारी पैसे ले जा रही ट्रेन लूटने की योजना के पीछे वह मास्टरमाइंड थे।
- घटना 9 अगस्त 1925 को लखनऊ के पास काकोरी में हुई थी।
- गोरखपुर सेंट्रल जेल में बंद रहने के दौरान, बिस्मिल एक राजनीतिक कैदी के रूप में व्यवहार करने की मांग को लेकर भूख हड़ताल पर चले गए।
- 19 दिसंबर 1927 को गोरखपुर जेल में बिस्मिल को फांसी दे दी गई। तब वह सिर्फ 30 साल के थे।

## राष्ट्रीय आंदोलन में उत्तर प्रदेश

### असहयोग आंदोलन (NCM)

- महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) द्वारा 5 सितंबर 1920 को असहयोग आंदोलन शुरू किया गया था।
- कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में असहयोग कार्यक्रम शुरू किया गया।
- कारण:**
  - द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अंग्रेजों में आक्रोश
  - प्रथम विश्व युद्ध के कारण आर्थिक कठिनाइयाँ
  - रॉलेट एक्ट और जलियांवाला बाग हत्याकांड

### चौरी चौरा की घटना

- चौरी चौरा उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले का एक कस्बा है।
- 4 फरवरी, 1922: किसानों की भारी भीड़ ने एक पुलिस थाने में आग लगा दी जिसमें 22 पुलिसकर्मियों की मौत हो गई।
- इस घटना के कारण महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन (1920-22) को समाप्त कर दिया।

### विवरण

- 4 फरवरी को, स्वयंसेवक इकट्ठे हुए और बैठक के बाद, एक जुलूस में स्थानीय पुलिस स्टेशन और पास के मुंडेरा बाजार में धरना दिया।

- पुलिस ने भीड़ पर गोलियां चलाई जिसमें कुछ लोगों की मौत हो गई और कई स्वयंसेवक घायल हो गए।
- जवाब में भीड़ ने धाने में आग लगा दी।
- भागने की कोशिश करने वाले कुछ पुलिसकर्मियों को पकड़ लिया गया और पीट-पीटकर मार डाला गया। हथियारों सहित पुलिस की बहुत सारी संपत्ति को नष्ट कर दिया गया।

### **अंग्रेजों की प्रतिक्रिया**

- ब्रिटिश राज ने आरोपियों पर आक्रामक तरीके से मुकदमा चलाया। एक सत्र अदालत ने 225 आरोपियों में से 172 को तुरंत मौत की सजा सुनाई। हालांकि, आखिरकार, दोषियों में से केवल 19 को ही फांसी दी गई।

### **महात्मा गांधी की प्रतिक्रिया**

- पुलिसकर्मियों की हत्या के अपराध की निंदा की।
- आस-पास के गांवों में स्वयंसेवी समूहों को भंग कर दिया गया।
- चौरी चौरा सपोर्ट फंड की स्थापना "वास्तविक सहानुभूति" प्रदर्शित करने और प्रायश्चित्त करने के लिए की गई थी।
- गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन को रोकने का फैसला किया, जिसे उन्होंने अक्षम्य हिंसा से कलंकित होने के रूप में देखा।
- कांग्रेस कार्यसमिति के खिलाफ गए और 12 फरवरी, 1922 को आन्दोलन औपचारिक रूप से निलंबित कर दिया गया।

### **अन्य राष्ट्रीय नेताओं की प्रतिक्रिया**

- जवाहरलाल नेहरू और असहयोग आन्दोलन का नेतृत्व करने वाले अन्य नेताओं को अचानक संघर्ष को रोक देने से अघात लगा क्योंकि नागरिक प्रतिरोध ने स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी।
- मोतीलाल नेहरू और सी.आर. दास जैसे अन्य नेताओं ने गांधी के फैसले पर अपनी निराशा जताई और स्वराज पार्टी की स्थापना का फैसला किया।

### **आन्दोलन को स्थगित करने का औचित्य**

- गांधी ने अपनी ओर से, अहिंसा में अपने अटूट विश्वास के आधार पर खुद को सही ठहराया।
- बिपन चंद्र जैसे इतिहासकारों ने तर्क दिया है कि अहिंसा की गांधीवादी रणनीति इस आधार पर थी कि अहिंसक प्रदर्शनकारियों के खिलाफ दमनकारी बल का उपयोग औपनिवेशिक राज्य के वास्तविक चरित्र को उजागर करेगा और अंततः उन पर नैतिक दबाव डालेगा, लेकिन चौरी चौरा जैसी घटनाओं ने उस रणनीति को हरा दिया।
- इसके अलावा, बिपन चंद्र का मत है कि वापसी या गैर-टकराव के चरण में बदलाव राजनीतिक कार्रवाई की रणनीति का एक अंतर्निहित हिस्सा है जो जनता पर आधारित है।

## **सविनय अवज्ञा आंदोलन**

### **कारण**

- साइमन कमीशन का गठन:
- डोमिनियन स्टेट्स की मांग की विफलता
- सामाजिक क्रांतिकारियों की गिरफ्तारी के विरोध में प्रदर्शन

### **आंदोलन का प्रसार**

- संयुक्त प्रांत: सरकार के खिलाफ नो-रेवेन्यू नो-रेंट अभियान शुरू किया गया, जो जल्दी ही जमींदारों के खिलाफ नो-रेंट अभियान में बदल गया।
  - जवाहरलाल नेहरू द्वारा आयोजित
  - आगरा और रायबरेली जिले अभियान के महत्वपूर्ण केंद्र थे।
- आंदोलन ने प्रभातफेरी, पत्रिका और मैजिक लालटेन सहित मोबिलाइजेशन तकनीकों को लोकप्रिय बनाया।

### **विशेषताएँ**

- पहला राष्ट्रव्यापी आंदोलन, जैसा कि अन्य सभी आन्दोलन शहरों तक सीमित थे।
- ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भी अपनी भागीदारी दर्ज कराने में सक्षम थे।
- बड़ी संख्या में महिलाओं ने लिया हिस्सा
  - कस्तूरबा गांधी, कमलादेवी चट्टौपाध्याय, अवंतिकाबाई गोखले, लीलावती मुंशी और हंसाबेन मेहता जैसी लोकप्रिय महिलाओं ने सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व किया।
- आदर्श वाक्य अहिंसा था।
- लगातार ब्रिटिश दमन के बावजूद इस आंदोलन ने हार नहीं मानी।

### **भारत छोड़ो आंदोलन (क्यूआईएम)**

- 8 अगस्त 1942 को, महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का आह्वान किया और मुंबई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सत्र में भारत छोड़ो आन्दोलन का शुभारंभ किया।
- गांधीजी ने गवालिया टैक मैदान में अपने भाषण में "करो या मरो" का आह्वान किया, जिसे अब अगस्त क्रांति मैदान के नाम से जाना जाता है।

### **विद्रोह के चरण**

#### **पहला चरण: शहरी विद्रोह**

- हड्डताल, बहिष्कार और धरना, जिन्हें जल्दी से दबा दिया गया था।
- पूरे देश में हड्डताल और प्रदर्शन हुए
- फैक्ट्रियों में काम न कर मजदूरों ने सहयोग दिया।
- गांधीजी को जल्द ही पुणे के आगा खान पैलेस में कैद कर दिया गया और लगभग सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

- दूसरा चरण: ग्रामीण इलाकों पर ध्यान केंद्रित किया गया
  - एक बड़े किसान विद्रोह को देखा, जिसे रेलवे ट्रैक और स्टेशनों, टेलीग्राफ तारों और खंभों, सरकारी भवनों पर हमले या औपनिवेशिक सत्ता के किसी अन्य दृश्य प्रतीक के रूप में संचार प्रणालियों के विनाश द्वारा चिह्नित किया गया था।
- अंतिम चरण: अलग-अलग इलाकों (बलिया, तमलुक, सतारा आदि) में राष्ट्रीय सरकारों या समानांतर सरकारों का गठन देखा गया।
  - बलिया (यूपी) में समानांतर सरकार:
    - सबसे पहले अगस्त 1942 में पूर्वी उत्तर प्रदेश के बलिया में स्थापित किया गया था।
    - नेता: चित्तू पांडे, एक स्व-वर्णित गांधीवादी।
    - हालांकि यह कलेक्टर को सत्ता सौंपने और सभी गिरफ्तार कांग्रेस नेताओं को रिहा करने के लिए राजी करने में सफल रही, लेकिन समानांतर सरकार लंबे समय तक नहीं चल सकी।

### भागीदारी का विस्तार

- किसानों की भागीदारी: सभी वर्गों के किसानों ने विशेष रूप से पूर्वी यूपी और बिहार, बंगाल के मिदनापुर, महाराष्ट्र के सतारा और अन्य राज्यों जैसे आंध्र प्रदेश, गुजरात और केरल में भाग लिया।
  - कई छोटे जमीदारों ने हिस्सा लिया, खासकर यूपी और बिहार में।
  - यहां तक कि बड़े जमीदारों ने भी तटस्थ रुख बनाए रखा और विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों की सहायता की।
- युवाओं की भागीदारी: राष्ट्रीय आंदोलन में लोकप्रिय भागीदारी और राष्ट्रीय हित से सहानुभूति के मामले में भारत छोड़ो आन्दोलन ने नई ऊँचाई को छुआ।

### उत्तर प्रदेश के स्वतंत्रता सेनानी

व्यक्तित्व	विवरण
बर्खन खान	<ul style="list-style-type: none"> <li>ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी में सूबेदार</li> <li>1857 के विद्रोह में भारतीय विद्रोही बलों के कमांडर-इन-चीफ।</li> <li>रोहिलखंड (उत्तर प्रदेश के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र) के बिजनौर में जन्मे।</li> </ul>
बेगम हजरत महल	<ul style="list-style-type: none"> <li>लोकप्रिय रूप से 'अवध की बेगम' या 'हजरत महल' के रूप में जाना जाता है।</li> <li>उन्होंने लखनऊ में 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ राजा जयलाल सिंह के नेतृत्व में समर्थकों के साथ विद्रोह किया।</li> <li>वह फैजाबाद (उत्तर प्रदेश) की रहने वाली थी।</li> </ul>

मंगल पांडे	<ul style="list-style-type: none"> <li>1857 के भारतीय विद्रोह के प्रकोप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले भारतीय सैनिकों में से एक।</li> <li>ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की बंगाल नेटिव इन्फैट्री की 34वीं रेजीमेंट में सिपाही।</li> <li>1857 के भारतीय विद्रोह के नायक के रूप में माना जाता है।</li> <li>उत्तर प्रदेश के ऊपरी बलिया जिले के एक गाँव नगवा में जन्मे।</li> </ul>
मौलवी लियाकत अली	<ul style="list-style-type: none"> <li>इलाहाबाद के धार्मिक नेता और 1857 के भारतीय विद्रोह के प्रमुख नेता।</li> </ul>
झांसी की रानी लक्ष्मीबाई	<ul style="list-style-type: none"> <li>झांसी रियासत की रानी</li> <li>वर्तमान में भारत के उत्तर प्रदेश में झांसी जिले में मौजूद है।</li> <li>वह ब्रिटिश राज के खिलाफ विद्रोह करने वाले प्रमुख नेताओं में से एक थीं।</li> <li>उसने ब्रिटिश राज के खिलाफ विद्रोह कर दिया क्योंकि उसके दत्तक पुत्र को वास्तविक उत्तराधिकारी नहीं माना गया।</li> <li>उसने अपने दत्तक पुत्र यानी दामोदर राव के लिए अपने सिंहासन की रक्षा के लिए विद्रोह किया।</li> </ul>
राव कदम सिंह	<ul style="list-style-type: none"> <li>1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने वाले गुर्जरों के एक छोटे समूह के नेता।</li> <li>मेरठ जिले में परीक्षितगढ़ और मवाना के राजा के रूप में लोकप्रिय।</li> </ul>
झलकारी बाई	<ul style="list-style-type: none"> <li>झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की महिला सेना में सेवा की और 1857 के भारतीय विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।</li> </ul>
आचार्य नरेंद्र देव	<ul style="list-style-type: none"> <li>भारत में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के प्रमुख सिद्धांतकारों में से एक।</li> <li>उनके लोकतांत्रिक समाजवाद ने सिद्धांत के रूप में हिंसक साधनों को त्याग दिया और सत्याग्रह को एक क्रांतिकारी रणनीति के रूप में अपनाया।</li> <li>न केवल मार्क्सवादी भौतिकवादी द्वंद्वात्मकता के माध्यम से बल्कि विशेष रूप से नैतिक और मानवतावादी आधार पर गरीबी और शोषण के उन्मूलन की वकालत की।</li> </ul>

<b>आसफ अली</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों में से एक।</li> <li>भारत से संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रथम राजदूत।</li> <li>ओडिशा के राज्यपाल के रूप में कार्य किया।</li> <li>वह सोहरा, उत्तर-पश्चिमी प्रांतों और ब्रिटिश भारत (अब उत्तर प्रदेश में) से थे।</li> </ul>	<b>गोविंद बल्लभ पंत</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और आधुनिक भारत के वास्तुकारों में से एक।</li> <li>अत्यधिक सक्षम वकील जो शुरू में रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान और 1920 के दशक के मध्य में काकोरी मामले में शामिल अन्य क्रांतिकारियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।</li> <li>वह 1937 से 1939 तक संयुक्त प्रांत के मुख्यमंत्री रहे।</li> <li>स्वतंत्रता के बाद, उन्होंने 1955 - 1961 तक केंद्रीय गृह मंत्री के रूप में कार्य किया।</li> </ul>
<b>अशफाकउल्लाह खान</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>शाहजहांपुर, उत्तर-पश्चिमी प्रांत, ब्रिटिश भारत (अब उत्तर प्रदेश में) से।</li> <li>भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानियों में से एक।</li> <li>उन्होंने राम प्रसाद बिस्मिल, राजेंद्र लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह, सचिंद्र बरखी, चंद्रशेखर आजाद, केशव चक्रवर्ती, बनवारी लाल, मुकुंदी लाल, मन्मथनाथ गुप्त के साथ लखनऊ के पास काकोरी में ब्रिटिश सरकार के पैसे लेकर ट्रेन लूट ली।</li> </ul>	<b>हसरत मोहानी</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>प्रसिद्ध उर्दू कवि और प्रमुख भारतीय स्वतंत्रता सेनानी।</li> <li>1921 में प्रसिद्ध नारा इंकलाब जिंदाबाद उनके द्वारा दिया गया था।</li> <li>1921 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में भारत के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करने वाले पहले व्यक्ति।</li> <li>ब्रिटिश भारत में संयुक्त प्रांत के उन्नाव जिले से।</li> </ul>
<b>चंद्रशेखर आजाद</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>उनका जन्म का नाम चंद्र शेखर तिवारी था, लेकिन लोकप्रिय रूप से उनके स्वयं के नाम आजाद ("द फ्री") के नाम से जाना जाता था।</li> <li>प्रसिद्ध भारतीय क्रांतिकारी जिन्होंने अपने संस्थापक राम प्रसाद बिस्मिल और तीन अन्य प्रमुख पार्टी नेताओं, रोशन सिंह, राजेंद्र नाथ लाहिरी और अशफाकउल्ला खान की मृत्यु के बाद हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन को हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (HSRA) के नए नाम के तहत पुनर्गठित किया।</li> </ul>	<b>मौलाना मोहम्मद अली</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>मौलाना मोहम्मद अली जौहर के नाम से मशहूर।</li> <li>वे 1923 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष बनने के लिए चुने गए।</li> <li>अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के संस्थापकों और अध्यक्षों में से एक।</li> </ul>
<b>चित्तू पांडेय</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उनके त्रुटीहीन नेतृत्व के कारण जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस द्वारा "बलिया के बाघ" के रूप में वर्णित।</li> <li>उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के रत्तुचक गांव में जन्मे।</li> </ul>	<b>मौलाना शौकत अली</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>वह खिलाफत आंदोलन के एक भारतीय मुस्लिम नेता थे</li> <li>1934 से 1938 तक ब्रिटिश भारत में 'सेंट्रल असेंबली' के सदस्य के रूप में कार्य किया।</li> </ul>
<b>गणेश शंकर विद्यार्थी</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>कानपुर से और असहयोग आंदोलन का जाना-माना चेहरा।</li> <li>वे पेशे से पत्रकार और हिंदी भाषा के समाचार पत्र प्रताप के संस्थापक-संपादक थे।</li> </ul>	<b>मुख्यार अहमद अंसारी</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीय राष्ट्रवादी और राजनीतिक नेता और कांग्रेस और मुस्लिम लीग के पूर्व अध्यक्ष।</li> <li>जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के संस्थापकों में से एक।</li> <li>1928 से 1936 तक इसके चांसलर रहे।</li> <li>वह पूर्वी उत्तर प्रदेश के युसूफपुर-मोहम्मदाबाद कस्बे का रहने वाला था।</li> </ul>

<b>राजेंद्र लाहिड़ी</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने के उद्देश्य से हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़े।</li> <li>दक्षिणेश्वर बम विस्फोट की घटना में भाग लिया और फरार हो गया।</li> </ul>		<b>राम प्रसाद बिस्मिल</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>1918 के मैनपुरी षडयंत्र और 1925 के काकोरी षडयंत्र में भाग लेने वाले भारतीय क्रांतिकारी।</li> <li>जाने-माने देशभक्त कवि और राम, अङ्गेय और बिस्मिल के कलम नामों का उपयोग करके हिंदी और उर्दू में लिखा।</li> </ul>
<b>राजा महेंद्र प्रताप</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>वे पत्रकार, लेखक और भारत के मार्क्सवादी क्रांतिकारी समाज सुधारक और भारत की पहली अस्थायी सरकार के अध्यक्ष थे।</li> <li>उनका जन्म उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में रियासत जाट परिवार में हुआ था।</li> </ul>		<b>स्वामी सहजानंद सरस्वती</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले से।</li> <li>समाज सुधारक, इतिहासकार, दार्शनिक, लेखक, तपस्वी, क्रांतिकारी, मार्क्सवादी, राजनीतिज्ञ जो भारत की भलाई के लिए काम करते थे।</li> <li>उनकी सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियाँ शुरुआती दिनों में ज्यादातर बिहार पर केंद्रित थीं और धीरे-धीरे अखिल भारतीय किसान सभा के गठन के साथ शेष भारत में फैल गईं।</li> </ul>
<b>मुनीश्वर दत्त उपाध्याय</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>भारतीय राजनेता और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नेता।</li> <li>प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश से।</li> </ul>			
<b>रफ़ी अहमद किदर्वई</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>राजनेता, भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता और एक समाजवादी जिनके समाजवाद को कभी-कभी इस्लामी समाजवादी के रूप में वर्णित किया जाता है।</li> <li>संयुक्त प्रांत (अब उत्तर प्रदेश) के बाराबंकी जिले से।</li> <li>भारत के पहले स्वतंत्र भारत के संचार मंत्री।</li> </ul>		<b>धन सिंह गुर्जर</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>वह मेरठ के भारतीय कोतवाल (पुलिस प्रमुख) थे जिन्होंने 1857 के विद्रोह में सक्रिय रूप से भाग लिया और मेरठ में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ प्रारंभिक कार्रवाई का नेतृत्व किया।</li> </ul>
<b>पुरुषोत्तम दास टंडन</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>वह भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे जिन्हें हिंदी के लिए भारत की राजभाषा का दर्जा प्राप्त करने के उनके प्रयासों के लिए याद किया जाता है।</li> <li>उन्हें प्रथागत रूप से राजर्षि की उपाधि दी गई थी (व्युत्पत्ति: राजा + ऋषि = शाही संत)।</li> </ul>		<b>विजय सिंह पथिक</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>लोकप्रिय रूप से राष्ट्रीय पथिक के नाम से जाने जाते थे।</li> <li>असली नाम: भूप सिंह।</li> <li>ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन की मशाल जलाने वाले पहले भारतीय क्रांतिकारियों में से।</li> </ul>
<b>राम मनोहर लोहिया</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक सदस्य।</li> <li>कांग्रेस सोशलिस्ट के संपादक जो 1942 तक बॉम्बे में विभिन्न स्थानों से गुप्त रूप से प्रसारित हुआ और कांग्रेस के साथ काम किया।</li> </ul>			